Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - II (Hons)
Paper - IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

GRB BOOKS

1 Lebnitz : "Doctrine of prestablished harmony"

Notes

लाइबनिज :- (पूर्व स्थापित सामंजस्य)

लाइबनिज भी देकार्त और स्पिनोजा की तरह एक बुद्धिवादी दार्शनिक थे। उन्होंने डिमोक्रिटस को प्लेटो से, अरस्तु को देकार्त से, शास्त्रियों को आधुनिक दार्शनिकों से तथा धर्म-विज्ञान को नीति-शास्त्र से युक्तियों के आधार पर मिलाने की कोशिश की है। लाइबनिज को अनेकतावादी भी कहा जाता है।

लाइबनिज के अनुसार विश्व-सत्ता द्रव्यों में पाई जाती है। उन्होंने द्रव्य को Monad माना है। उनके अनुसार Monad एक नहीं अनेक है। सबका अपना अलग तत्व है। प्रत्येक Monad शाश्वत और अपने में पूर्ण है, क्योंकि प्रत्येक में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निहित है और इसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्य की घटनाएँ अन्तर्भूत है। इसलिए यह ऐसा है जिसमें विराट विश्व है चूंकि इसमें आदि और अन्त सभी है इसलिए इसमें अतीत की सभी क्रियाएँ संरक्षित है और भविष्य में होने वाली सभी बातें बीजरूप में मौजूद है चूंकि प्रत्येक Monad स्वतन्त्र तथा स्वावलम्बी सत्ता है इसलिए किसी Monad को दूसरे की आवश्यकता नहीं होती है और न वे

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB
BOOKS

एक दूसरे पर निर्भर हैं और न उनमें किसी प्रकार का आदान-प्रदान सम्भव है। प्रत्येक Monad छिद्ररहित या गवाक्षहीन है।

अब यहाँ पर एक प्रश्न उठता है कि यदि प्रत्येक Monad स्वतन्त्र तथा स्वावलम्बी सत्ता है उन्हें किसी दूसरे की आवश्यकता नहीं पड़ती और न उनमें किसी प्रकार का आदान-प्रदान सम्भव है तो इस विश्व में एकता और सामंजस्य कैसे पाया जाता है। इस विरोधाभास का परिहार करने के लिए लाइब्नित्ज ने एक सिद्धान्त का सहारा लिया है जिसे 'पूर्वस्थापित सामंजस्य' Pree established harmony कहते हैं।

लाइब्नित्ज के अनुसार समस्त विश्व का आधार है चित्‌शक्ति क्योंकि चित-शक्ति के अतिरिक्त विश्व में और कुछ नहीं है। समस्त विश्व को प्रतिबिम्बित करने का अर्थ है अपनी ही चित-शक्ति का विकास करना। प्रत्येक Monad में चित्‌शक्ति के रूप में समस्त विश्व बीजरूप में विद्यमान है। इस सुप्त शक्ति को जागृत करना, अधिकाधिक चैतन्य प्राप्त करना, अधिकाधिक सक्रिय होना ही विश्व को प्रतिबिम्बित करना है। Monad ... में समान होते हुए भी इस शक्ति के क्रिया विस्तार विकास में भिन्न हैं।

सभी Monad एक विश्व को विभिन्न रूपों में विकासित करते क्योंकि सभी Monad का

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS Notes

विकास समान नहीं है, शक्ति सब में बराबर है, किन्तु उस शक्ति को क्रियान्वित करके सब ने एक रूप में नहीं पा लिया है। जैसे - सब मनुष्य में शक्ति है कि वे एम०ए० परीक्षा उत्तीर्ण कर सकें किन्तु इसका विकास अलग-अलग मनुष्यों में अलग-अलग रूप में होता है। इसके लिए परस्पर-सम्बद्ध सोपानयुक्त श्रेणियाँ बनानी पड़ती है। कोई मैट्रिक है कोई इन्टर है कोई बी०ए० है और कोई एम०ए०। इसप्रकार Monad में भी शक्ति के वास्तविक विकास की दृष्टि से श्रेणियाँ है क्योंकि प्रत्येक Monad का ज्ञान अपनी विशेषता रखता है और दो Monads में विश्व का प्रतिबिम्ब बिल्कुल एक जैसा नहीं हो सकता। विश्व में न अनावश्यक है न पुनरावृत्ति। प्रत्येक Monads का अपना अलग विश्व है। अतः उतनी ही श्रेणियाँ है जितने Monads हैं किन्तु फिर भी समान प्रतिबिम्बों के आधार पर लाइबनिज के अनुसार स्थूल रूप में Monad को हम पाँच श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं।

1. अचेतन Monad जिनको 'जड़-जगत' कहा जाता है। इनमें - चैतन्य सुप्त या मूर्छित रहता है, यह चैतन्य का क्षीणतम स्तर है, उपनिषद में इसको 'अन्नमय' कोश कहा गया है।

उपचेतन Monad जिसे 'वनस्पति जगत' कहा जाता है। इसमें चैतन्य

सुगम पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

GRB BOOKS

स्वप्न स्थित सा रहता है। यह क्षीणतर सम्वेदन का स्तर है। उपनिषद् में इसको प्राणमय कोष कहा गया है।

अचेतन और उपचेतन Monads को लाइब्निज ने simple or naked Monads नाम दिया है।

3. चेतन (Soul Monads) जिनको 'पशु जगत' कहा जाता है। इनमें चैतन्य जाग्रत रहता है। यह सहज मानसिक प्रवृत्तियों का स्तर है। उपनिषद् में इसे मनोमय कोश कहा गया है।

4. स्वचेतन (Spirit monads) जिसे 'मानव-जगत' कहा जाता है। यह 'आत्म-जगत' है। यह स्पष्टतर ज्ञान का स्तर है। उपनिषद् में इसको विज्ञानमय कोश कहा गया है।

5. परम या ईश्वर (God Monad or queen monad) जिनका ज्ञान स्पष्टतम है। यह दिव्य जगत है। उपनिषद् में इसे आनन्दमय कोश कहा गया है। यह पुरुषोत्तम का स्तर है।

सभी Monads का लक्ष्य है सर्वोत्तम ईश्वर के समान बनाना। क्योंकि Monads ~~सर्वोत्तम ईश्वर की समान अवस्था~~ इस लक्ष्य की ओर बढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों वे ज्ञान-तन्त्र और उच्चतर होते जाते हैं अधिक विकसित और सक्रिय होते जाते हैं। ईश्वर ही सच्चे अर्थ में पूर्ण क्रियान्वित शक्ति है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सब Monads में शक्त्यवरोध का बीज विद्यमान है जो उनकी शक्ति को रोकता है। इस बीज को लाइब्नित्ज ने सूक्ष्म जड़ता (Materia Prima) कहा है। जब यह बीज मूर्त रूप ले लेता है तब इसे स्थूल जड़ता कहा जाता है। ईश्वर के अतिरिक्त सभी Monads में यह सूक्ष्म जड़ता न्यूनाधिक मात्रा में विद्यमान रहती है और इसलिए Monads में विकास का तारतम्य है। जिनमें यह सूक्ष्म जड़ता अधिक है, वे कम क्रियाशील और विकसित हैं, और जिनमें कम है व अधिक क्रियाशील और विकसित है। यह सूक्ष्म जड़ता वेदान्त की अविद्या के समान है। यह क्यों और कहाँ से आई इसका लाइब्नित्ज के पास कोई उत्तर नहीं।

लाइब्नित्ज के अनुसार ईश्वर ने Monads की सृष्टि की है, उनको स्वतन्त्र बनाया है किन्तु साथ ही सबको एकतन्त्र में बाँध दिया है। प्रत्येक Monads अपनी स्वतन्त्र सत्ता और विशेषता रखते हुए भी विश्व की एकतन्त्रता का भंजन नहीं करता। इस सार्वभौम ईश्वरीय नियम को लाइब्नित्ज 'पूर्व-स्थापित सामञ्जस्य' कहते हैं। अतः Monads गवाक्षहीन होकर भी [illegible] के साहचर्य में हैं। सभी Monads में एक

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

समान ही क्रिया उत्पन्न होती हैं।
पूर्व स्थापित सामंजस्य की व्याख्या लाइबनिज के उदाहरणों से करते हैं। इनका कहना है कि orchestra के वाद्ययंत्र भिन्न-भिन्न होते हैं और बजाने वाले अनेक होते हैं, परन्तु सभी वाद्ययंत्र से एक ही स्वर की सृष्टि होती है। एक बजवैया दूसरे कि क्रिया-कलाप पर ध्यान नहीं देता। वह केवल अपनी रागनी के अनुसार बाजे से स्वर निकालता है। पर सभी बजवैयों की रागिनी से एक ही स्वर निकलता है। इसी प्रकार दो घड़ियाँ हैं जिनकी गति में समानता है। फलतः एक का समय दूसरे के समान है। लाइबनिज के अनुसार घड़ी साज ने घड़ियों को इस निपुणता से बनाया है कि दोनों का चक्र बिल्कुल समान है। घड़ी साज हस्तक्षेप नहीं करता, वरन निर्माण काल में ही उनकी गति की समानता निश्चित कर दी गयी है। ठीक उसी प्रकार प्रत्येक Monads अपनी आन्तरिक प्रयोजन-वृत्ति के अनुसार क्रियाशील होता है। परन्तु सभी Monads की क्रियाशीलता ईश्वर के चरम लक्ष्य से संचालित होती है।

पूर्व स्थापित सामंजस्य के अनेक गुण हैं -

1. पूर्व स्थापित सामंजस्य के द्वारा लाइबनिज शरीरात्मा के सम्बन्ध की व्याख्या करते हैं। उनके अनुसार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS Notes

शरीर और आत्मा में सम्बन्ध का कारण ईश्वर है। ईश्वर ने शरीर Monads और आत्मा Monads का निर्माण कर उनमें पहले से ही सम्बन्ध नियत कर दिया है। दोनों स्वतन्त्र हैं निरपेक्ष हैं परन्तु सहचारी हैं, तथा एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। दोनों एक ही विकास के दो स्तर हैं। लाइबनिज ने घड़ी की गति की समानता के उदाहरण से शरीरात्मा पर प्रकाश डाला है। किन्हीं दो घड़ियों की गति में समानता के अनेक कारण हैं। किन्हीं दो घड़ियों में समानता हो सकती है यदि उनका निर्माण ही इस कौशल से किया जाय कि दोनों सहचारी हों। अर्थात उनके सत्य को पहले से ही नियत कर दिया जाय। लाइबनिज कुशल कारीगर की तरह ईश्वर को मानते हैं परन्तु ईश्वर का सतत हस्तक्षेप नहीं स्वीकार करते हैं।

2. उपर्युक्त घड़ी का उदाहरण देकर लाइबनिज जड़ और चेतन की समस्या का समाधान करते हैं। जड़ और चेतन नितान्त भिन्न नहीं हैं जैसा देकार्त मानते हैं तथा दोनों समानान्तर भी नहीं हैं जैसा स्पीनोजा मानते हैं, वरन् दोनों सम्बद्ध हैं। दोनों का सम्बन्ध ईश्वर द्वारा नियत कर दिया गया है। लाइबनिज पूर्णतः अचेतन अर्थ में जड़ की सत्ता

सुगम पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

नहीं मानते इनके अनुसार जड़ का अर्थ न्यून चेतन है अचेतन नहीं। मोनाड जितनी अज्ञानी है, वह उतना ही निष्क्रिय है। अतः जड़ता निष्क्रियता का द्योतक है। केवल ईश्वर ही पूर्णतः चेतन है, अतः वही पूर्णतः सक्रिय है।

लाइबनिज पूर्वस्थापित सामंजस्य के आधार पर अनेक विरोधी मतों और वादों का समाधान करते हैं. लेकिन यह सिद्धान्त कई आपत्तियों से घिरा है।

1. वास्तव में देखा जाय तो पूर्वस्थापित सामंजस्य का सिद्धान्त केवल एक धारना है जिसे कभी सिद्ध या असिद्ध नहीं किया जा सकता और ऐसा सिद्धान्त जिसके विपक्ष में कुछ भी निश्चित रूप से निश्चित नहीं किया जा सके उसे उचित सिद्धान्त नहीं कहा जा सकता है।

2. लाइबनिज में जिस ईश्वर का उल्लेख किया है, वह Monads के अपने स्वरूप से सिद्ध नहीं होता है। यहाँ deus ex machina को व्यवहार किया गया है। अतः इस आरोपित सामंजस्य को सही नहीं कहा जा सकता है।

3. लाइबनिज ने ईश्वर को मोनाडवाद में लाकर असंगत बना दिया है। यदि Monads शाश्वत हैं जो न इन्हें और न इनके बीच के सम्बन्ध को रचा जा सकता है और

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

इसलिए द्रव्य की भी रचना किसी से नहीं की जा सकती है पर यदि ईश्वर ने Monads की रचना की है तो उन्हें आत्मकर्मी तथा अनादि मानना गलत है।

5. लाइबनित्ज Monads को परस्परापेक्ष नहीं मानते हैं फिर उनमें आपस का सम्बन्ध स्वीकार करते हैं orchestra से विश्व में सामंजस्य तथा एकरूपता की ओर दो घड़ियों के उदाहरण से उन्होंने शरीर-आत्मा की समस्या का समाधान किया है। परन्तु वस्तुतः ये दोनों उदाहरण विश्वगत सामंजस्य और अन्तर्क्रिया सम्बन्धों की व्याख्या नहीं कर पाते। यह केवल उपमा है व्याख्या नहीं।

अतः लाइबनित्ज का पूर्वस्थापित सामंजस्य सन्तोषप्रद सिद्धान्त नहीं है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS